ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 327-328
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-7, No.-I, Issues-VIII YEAR- June-2017

निबन्ध साहित्य में महादेवी वर्मा के निबन्धों का विश्लेषण

डॉ0 सुमन ढाका
एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, चौमूं (राजस्थान), भारत

आस्वादन की दृष्टि से साहित्य के दो भेद किये गये हैं। दृश्य तथा श्रव्य। रूप के अन्तर्गत पद्य एवं गद्य की गणना की जाती है। गद्य के दो रूप हैं – कथात्मक एवं विचारात्मक। इसी विचारात्मक विधा का सर्वोत्तम निदर्शन निबंध विधा में प्राप्त होता है। गद्य की जितनी भी विधाएँ हैं– चाहे कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण, रेखाचित्र इत्यादि इन सब में निबन्ध विधा सर्वाधिक गंभीर रूप से विश्लेषणीय है। 'निबन्ध' केन्द्रित चिन्तन की सुदीर्घ परम्परा रही है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में पद्यमय रचना भी निबन्ध के अन्तर्गत मानी जाती थी।

द्विवेदी युग में सरस्वती के सम्पादन काल में संस्कृतज्ञ हिन्दी के विद्वान गद्य–पद्य शैली में रचित रचना को निबन्ध कहते थे।

डॉ0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के शब्दों में – "निबन्ध रचना केवल खड़ी बोली की विशेषता है। खड़ी बोली गद्य के लए उन्नीसवीं शताब्दी और उसमें भी निबन्ध रचना की दृष्टि से उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से निबन्ध हिन्दी साहित्य का नितान्त आधुनिक रूप है।"[1]

डॉ0 विमलेश तेवतिया के शब्दों में– "निबन्ध एक ऐसी गद्य रचना है, जिसमें मानसिक शिथिल का आवेग रहता है, साथ संगीत, सम्बन्धता, विषय विवेचन की संक्षिप्तता, स्वानुभूतियों की प्रधानता तथा कसावट रहती है। यहाँ विषय की अपूर्वता या महत्त्व को नहीं विचारा जाता बल्कि विषय प्रतिपादन की मौलिकता तथा शैली में सौष्ठव को परखा जाता है। वास्तव में गद्य का पूर्ण विकसित रूप निबन्ध में ही प्राप्त होता है।"[2] महादेवी वर्मा के शब्दों में "विचार के क्षणों में मुझे गद्य लिखना ही अधिक अच्छा लगता है। अपनी अनुभूति ही नहीं, बाह्य परिस्थितियों के विश्लेषण के लिए भी पर्याप्त अवकाश रहता है।"[3] छायावादी साहित्य की साक्षात् दीपशिखा तथा वंदना, विश्वव्यापी मानव एवं पशु–पक्षी प्राणियों के प्रति संवेदना व्यक्त करने वाली कवयित्री महादेवी वर्मा का निबन्ध संसार भी विषय–गांभीर्य की दृष्टि से अतुल्य एवं स्तुत्य है। वे जितनी भाव प्रवणता से कविता रचती हैं उतनी ही बौद्धिक गम्भीरता से बनन्धों की रचना करके अपने श्रेष्ठ निबन्धकार रूप को सहज ही में प्रतिपादित कर देती है।

यह सत्य है कि निबन्ध विचारात्मक गद्य है, लेकिन महादेवी वर्मा की लेखनी वहाँ भी गुरु गंभीर अनुभुत्यात्मक संवेदनशीलता की सृष्टि रच देती है। महादेवी वर्मा की प्रसिद्ध तीन निबन्ध रचनाएँ हैं – (1) क्षणदा (2) शृंखला की कड़ियाँ (3) साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध।

महादेवी वर्मा कृत निबन्ध कृति 'क्षणदा' संक्षिप्त परिचय – 'क्षणदा' शब्द का अर्थ 'रात्रि' होता है। यहाँ पर महादेवी जी के निबन्धों से ऐसा प्रतीत होता है, मानों वे रात्रि के सन्नाटें में विहार कर रही है, जिस प्रकार रात्रि तीन प्रहारों में विभाजित हो जाती है उसी प्रकार 'क्षणदा' के निबन्धों को तीन भागों में बाँटा जा सकती है।

समसामाजिक आधुनिक समस्या प्रधान निबन्ध, शुद्ध साहित्यिक निबन्ध, मधुर स्मृति प्रधान निबन्ध 'क्षणदा' के निबन्ध तत्कालीन राष्ट्रीय परिवेश की मानसिकता को भलीभाँति उद्घाटित करते हैं।

'क्षणदा' के निबन्ध साहित्य और साहित्यकार के सम्बन्धों, श्रेष्ठ साहित्य की कसौटी, राष्ट्र भाषा हिन्दी के सन्दर्भ की तुलना बाजार में प्रचलित आर्थिक मुद्रा से नहीं की जा सकती। भाषा जीवन की अभिव्यक्ति का महाभाष्य है तथा संस्कृति से उसका अभिन्न संबन्ध होता है। महादेवी वर्मा अपने निबन्धों में इसे उद्घाटित करती है। वे संस्कृति को किसी भी राष्ट्र की आत्मा का दिव्य संगीत मानती है।

वे अपने निबन्ध संग्रह के माध्यम से कला की साधना को हितकर सिद्ध करती है। कला की साधना जीवन के विकृत, विद्रूप, कुत्सित, अस्थिर तथा अमंगलकारी तत्त्वों को दूर करके सुन्दर, शाश्वत, कल्याणकारी शिवत्व प्रदान करती है। 'क्षणदा' के निबन्धों में महादेवी वर्मा जी का मौलिक चिंतन तथा समसामाजिक राष्ट्रीय सन्दर्भ में राष्ट्र भाषा की समस्या साहित्य और साहित्यकार के दायित्वों के साथ–साथ संस्.ति के प्रष्न को अनेक कसौटियों से परीक्षित करने का ठोस प्रयास उद्घाटित

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

अनुरूपी लेखक

हुआ है।

महादेवी वर्मा कृत निबन्ध कृति 'शृंखला की कड़ियाँ' संक्षिप्त **परिचय –** महादेवी वर्मा की निबन्ध कला को प्रमाणित करने वाली उत्कृष्ट रचनाओं में 'शृंखला की कड़ियाँ' अपनी विशिष्ट भूमिका रखती है। यह रचना महादेवी की नारी विषयक अवधारणा का महाकाव्य प्रस्तुत

करती है।

इसमें मुख्य रूप से नारी समाज की व्यथा–कथा से जुड़ी हुई विभिन्न समस्याओं का यथार्थ अंकन हुआ है। नारी जगत की समस्याओं के समाधान हेतु वे अपनी निर्णयात्मक दृष्टि भी प्रतिपादित करती है।

महादेवी के अनुसार – "भारतीय नारी भी जिस दिन अपने संपूर्ण प्राणवेग से जाग सके उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए संभव नहीं।"

महादेवी वर्मा ने सामान्य जीवन जीवने वाली नारी से लेकर सत्याग्रही महिलाओं की स्थिति पर भी गम्भीरतापूर्वक विचार किया है। भारतीय नारी की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं का बहुत गहराई के साथ एक समाज–शास्त्री की भाँति विश्लेषण विवेचन किया है।

महादेवी वर्मा ने पुरुष वर्ग एवं समाज के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है।

भारतीय नारियों की समस्या को समझने के लिए भारतीय परिवेश का सामाजिकता को हृदयगम करना अनिवार्य है उन्हें आप अनदेखा नहीं कर सकते। किसी भी समस्या का समाधान उसके मूल तक पहुँचने से ही हो सकता है। इस कृति में महादेवी वर्मा ने जितने गहन स्तर पर नारी समस्या को समझा है वह अतुलनीय है।

महादेवी की निबन्ध कृति 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध' संक्षिप्त परिचय– 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध' मूल रूप से विषय निष्ठ निबन्ध है, जिसमें कवयित्री के बौद्धिक चिन्तन का उदात्त स्वरूप व्यंजित हुआ है। महादेवी वर्मा की साहित्यिक मान्यताओं का दिग्दर्शन कराने वाला निबन्ध संग्रह है।

इन निबन्धों से यह ज्ञाता होता है कि एक समसामयिक निबन्धकार गद्य की आड़ लिए बिना अपनी आंतरिक भावनाओं, अनुभूतियों को सही रूप में अभिव्यक्ति प्रदान नहीं कर सकता क्योंकि काव्य मात्र कल्पना, भावना और संभावनाओं पर आधारित रहता है। जबकि गद्य यथार्थता को अभिव्यक्त करता है।

इस निबन्ध कृति में महादेवी वर्मा जी साहित्य

संबंधी, गीति काव्य, काव्य में यथार्थ और आदर्श के संतुलन, वर्तमान उपनिवेशवादी एवं बाजारवादी समाज में साहित्यकार की आस्था का उद्घाटन अपनी सशक्त एवं समर्थ कलम से करती है। महादेवी वर्मा के निबन्धों का अध्ययन करने से एक विशेष तत्त्व सामने आया है कि उनके सभी निबन्ध सामाजिक, सांस्कृतिक विचारों से ओतप्रोत है।

साराशतः यह कहा जा सकता है कि साहित्यिक समस्याओं, युगीन परिस्थितियों और जीवन के विविध सिद्धान्तों का गहन विवेचन उनकी कृतियों में हुआ है। नारी की जीवन साधना और उसकी करुण परिस्थितियों का चित्रण अत्यन्त मार्मिक और अनूठा है। निबन्धों में विषयों की गहराई है। न तो प्राचीनता का आँख बन्द कर समर्थन किया है और न ही आधुनिकता की भर्त्सना की है। सभी जगह सामंजस्य दिखाई पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय : आधुनिक साहित्य, पृ0 148, हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी
2. डॉ० विमलेश तेवतिया : महादेवी वर्मा व्याक्तित्व और कृतित्व, पृ0 183,
3. डॉ० आशा देवी कश्यप : निबन्धकार महादेवी वर्मा, पृ0 11, 12

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14